(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

# *रस की दृष्टि से संस्कृत काव्यार्थ सौंदय*

**डॉ नीरज कुमारी**

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

# SANSKRIT POETIC BEAUTY FROM THE POINT OF VIEW OF RASA

**Dr. Neeraj Kumari**

*Associate Professor, Sanskrit Department*

*Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India*

## ABSTRACT

*Just as different ornaments are needed to beautify a woman, in the same way, to enhance the beauty of poetry, there is a need for decorations in it. The lyricist decorates his song both internally and externally. The emotional side is directly related to the heart of the work, because the heart is the basis of feelings. The artistic side of the song is related to the intelligence of the lyricist. The art side is needed to reach the verbal expression of the heart's feelings and to present them in a charming way. The importance of coloring in the picture of the painter, the same importance is of the art side in making the emotion of the poem interesting and heart-warming.*

## *सारांश*

*जिस प्रकार स्त्री को सुसज्जित करने के लिए विभिन्न अलंकरणों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार काव्य के सौंदर्यवर्धन के लिए उसमें साज–सज्जा की आवश्यकता होती है। गीतकार अपने गीत को उत्कृष्ट बनाने के लिए आन्तरिक और बाह्य, दोनों प्रकार की सज्जा करता है। भावपक्ष का सीधा सम्बन्ध कृति के हृदय से होता है, क्योंकि भावों की संवेदना या अनुभूति का आधार हृदय ही है। गीत के कलात्मक पक्ष का सम्बन्ध गीतकार के बुद्धितत्त्व से होता है। हृदयगत संवेदना को शाब्दिक अभिव्यक्तितक पहुँचाने के लिए तथा चमत्कृतिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कलापक्ष की आवश्यकता होती है। जो महत्त्व चित्रकार के चित्र में रंग भरने का है, वही महत्त्व काव्य के भावपक्ष को रोचक एवं हृदयावर्जक बनाने में कलापक्ष का है।*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

## *परिचय*

*काव्य में कलापक्ष की प्रधानता होने के साथ–साथ भावपक्ष की भी प्रधानता होती है। किसी भी कार्य की श्रेष्ठता का मापदण्ड उसका भावपक्ष होता है। कलापक्ष के माध्यम से भावपक्ष सौन्दर्ययुक्त एवं अधिक आकर्षक हो जाता है। किसी भी गीत में आनन्द की अनुभूति उसके सुदृढ़ भावपक्ष के द्वारा ही होती है क्योंकि भावपक्ष में रसपरिपाक तथा भावाभिव्यक्ति आदि का समावेश होता है परन्तु कलापक्ष उसके कलेवर को सुगठित एवं चमत्कृत करता है। गीतकार गीतों के भावपक्ष में रोचकता, सजीवता एवं संवेदनशीलता लाने के लिए भाषा, शैली, गुण, अलंकार और छन्दादि जिन तत्त्वों का अवलम्बन लेता है, वे सभी इस कलापक्ष के तत्त्व हैं। इस प्रकार साहित्यिक पृष्ठभूमि में अर्वाचीन संस्कृ त गीतों के कलात्मक एवं भावात्मक तत्त्वों का विस्तृत विवरण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत नव गीतों की साहित्यिक समीक्षा को चार उपशीर्षकों में विभक्त करते हुए उसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–*

*काव्यार्थ के साथ तन्मयता के द्वारा जो आनन्द का अनुभव होता है, वही आस्वादन रस कहलाता है। **'रस'** साहित्य ही नहीं, जीवन के भी उपादानों में सर्वथा चिरानुभूत और चिराभिलषित है। भारतीय वाङ्मय में रस अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, यथा– पदार्थों का रस, आयुर्वेद का रस, साहित्य का रस और भक्ति का रस। पदार्थ–रस के रूप में यह जिह्वा स्वाद से सम्बद्ध है। आयुर्वेद–रस के रूप में यह भस्म, रसायन तथा औषधीय गुणों से युक्त चिकित्सा से सम्बन्धित है। साहित्य–रस का तात्पर्य सौन्दर्यानुभूति से है और भक्ति–रस के रूप में यह मूलतः ब्रह्मानन्द का बोधक है। इस प्रकार से अनेक रूपों में प्रयुक्त 'रस' की व्युत्पत्ति **'रस्यते आस्वाद्यते इति रसः'** है जिसका अर्थ है जो आस्वादित हो, वही रस है या जिसका आस्वादन किया जाए वह रस है।*

*आचार्य भरतमुनि ने **'नाट्यशास्त्र'** ग्रन्थ में रस को इस प्रकार परिभाषित किया है–*

***विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः।***[1]

*अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। आचार्य मम्मट कृत **'काव्यप्रकाश'** के चतुर्थ उल्लास में रस के स्वरूप का इस प्रकार वर्णन किया गया है–*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***कारणान्यथ कार्याणि सहाकारीणि यानि च।***

***रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाटयकाव्ययोः।।***

***विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।***

***व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः।।*[2]**

*अर्थात् लोक में जो स्थायी भाव (ललनादि विषयक प्रीति) आदि चित्तवृत्तिविशेष के जो कारण (ललनादि जनक कारण तथा चन्द्रोदय आदि परिपोषक कारण) तथा कार्य (रत्यादि–जन्य कायिक, वाचिक तथा मानसिक भेद से अनेक प्रकार के कटाक्ष तथा भुजोत्क्षेप आदि) और (सहकारी रत्यादि के सहायक निर्वेद, शोक एवं उत्साह इत्यादि) भाव हैं, उनका यदि अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में वर्णन किया जाता है, तो वे क्रमशः विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव कहे जाते हैं। उन विभावादि के द्वारा अथवा उनके सहित व्यंजना द्वारा व्यक्त किया हुआ वह स्थायी भाव रस कहलाता है। अतः इन तीनों भावों का सम्मिश्रण ही रस है। भाव से रहित रस नहीं हो सकता तथा रसहीन भाव की भी सत्ता नहीं है।*

***न भावहीनोऽस्ति रसो न भावो रसवर्जितः।*[3]**

*काव्य में रस और भाव दोनों की स्थिति एक साथ विद्यमान रहती है। जहाँ भाव होता है, वहीं रस की उपस्थिति होती है और जहाँ रस होता है, वहाँ भाव का होना अपरिहार्य एवं स्वाभाविक है। वस्तुतः विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव से ही रस उत्पन्न होता है। जो भाव मूलरूप में मनुष्य के हृदय में विद्यमान रहते हैं तथा सम्बन्धित विषय के उपस्थित होने पर जाग्रत हो जाते हैं। ऐसे भाव स्थायी भाव कहलाते हैं। यही भाव सुख–दुःख के रूप में परिणत होकर मानव के हृदय में हर्ष तथा विषाद उत्पन्न करते हैं।*

*रस की अभिव्यक्ति में सहायक विभाव दो प्रकार के होते हैं– आलम्बन तथा उद्दीपन। जिसका आलम्बन करके रत्यादि स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वह **'आलम्बन विभाव'** है और उस रत्यादि स्थायीभाव को उद्दीप्त करने वाली सामग्री 'उद्दीपन विभाव' है। रत्यादि की अनुभूति के पश्चात् **'स्मित'** आदि बाह्य व्यापार अनुभाव हैं। संचारी भाव (व्यभिचारी) उत्पन्न हुये 'रति' आदि स्थायी भाव की पुष्टि करते हैं।*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***शृंगार रस***

***रम्यदेशकलाकालवेषभोगादि सेवनैः।***

***प्रमोदात्मा रतिः सैव यूनोरन्योन्यरक्तयोः।***

***प्रदृष्यमाणा शृंगारो मधुरांगविचेष्टितैः।।*[20]**

*रमणीय देश, वेश तथा भोग आदि के सेवन के द्वारा परस्पर युवक–युवति का जो अनुराग होता है, वह रति भाव कहलाता है। वही मधुर अनुराग आंगिक चेष्टाओं से पुष्ट होकर शृंगार रस का आस्वादन कराने में समर्थ होता है। आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री प्रणीत **'काकली'** में शृंगाररस का प्रयोग प्रधान रूप से किया गया है। जिसका एक उदाहरण इस प्रकार है–*

***कादम्बिनी त्वमसि किम्?***

***दयिताया मे नाम वर्त्तते तेऽपि ततो नु हससि किम्?***

***कादम्बिनी त्वर्मास किम्?***

***चन्दां मन्दीकृतस्त्वया, मद्वल्लभया मुखचन्द्रः,***

***तारास्त्वयि संलग्ना, भग्ना तस्यान्तदलि 'तारा'।*[21]**

*प्रस्तुत रस का स्थायी भाव रति है। इस गीत में कादम्बिनी अर्थात् मेघमाला की तुलना कवि ने किसी कादम्बिनी नाम्नी प्रयेसी से की है। उन्होंने मेघमाला की चमक–दमक देखकर पूछा है कि कया तुम कादम्बिनी हो? हाँ! वो तुम हो ही लेकिन मेरी प्रिया का नाम भी वही है। क्या, यही सोचकर तुम हँस रही हो? तुमने तो चन्द्रमा का मुख मलिन कर दिया है। किन्तु मेरी प्रिया के द्वारा तो अच्छे–अच्छे का मुखचन्द्र मलिन कर दिया जाता है। ये जो तारे तुममें संलग्न हैं, इनका अभिमान मत करो। मेरी प्रेयसी की सखी का नाम भी तारा है। प्रस्तुत गीत में **'मेघमाला'** उद्दीपन तथा कादम्बिनी आलम्बन विभाव है। **'मेघमाला की चमक–दमक'** तथा उसका हँसना अनुभाव हैं। प्रिया की तुलना मेघमाला से करने पर जो **'रोमांच'** उत्पन्न हो रहा है वह सात्विक भाव है। प्रेयसी की प्रशंसा में 'हर्ष'*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*की अनुभूति व्यभिचारी भाव है। इस प्रकार अपनी प्रेयसी के कल्पित वर्णन में गीतकार ने श्रृंगार रस का प्रयोग किया है।*

***'गीतम्'*** *नामक गीत में आचार्य ने किसी प्रणयानुरक्ता नायिका के सौन्दर्य का मनोरम चित्रण किया है, जो इस प्रकार है–*

***मधुरं मधुरम्;***

***रूपं सौदर्यं लावण्यन्ते मधुरं मधुरम्।***

***प्रिये, पश्य वरवचनविरचनाज्जितमधुमकरन्दम्,***

***पतति तेऽधरे पीयूषं सततं मन्दं मन्दम्।***

***अयि वितरदमरताम्पिबताम्।***[22]

*हे प्रिय ! तुम मधुर ही मधुर हो। तुम्हारा रूप, तुम्हारा सौन्दर्य, तुम्हारा लावण्य, सबकुछ मधुर ही मधुर है। देखो, श्रेष्ठ वचन की रचना से युक्त वासन्तिक मकरन्द रूपी अमृत तुम्हारे अधर पर निरन्तर धीरे–धीरे गिर रहा है। अरी प्रेयसि! इस बिखरते हुए मकरन्द को पीयो। इस प्रकार गीतकार ने प्रस्तुत पंक्तियों में श्रृंगार रस का प्रयोग किया है। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव* ***'रति'*** *है।* ***'प्रिया'*** *इसमें आलम्बन विभाव है। उसकी* ***'मधुरता', 'सौन्दर्य', 'लावण्य'*** *और* ***'वाचन'*** *उद्दीपन विभाव है। प्रिया का लज्जा करना एवं मुस्कराना आदि अनुभाव है। प्रिया की प्रशंसा करने पर जो* ***'रोमांच'*** *उत्पन्न हो रहा है, वह सात्विक भाव है। उसमें* ***'हर्ष', 'मद', 'तर्क', 'औत्सुक्य'*** *तथा* ***'चपलता'*** *के भाव व्यभिचारी भाव हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. रामविनय सिंह की* ***'शाश्वती'*** *गीत रचना के* ***'मदिरचपलनयने', 'मधुकर', 'मुखकलम्'*** *तथा* ***'त्वादृशी'*** *इत्यादि गीतों में संयोग श्रृंगार रस का मनोरम प्रयोग हुआ है।*

## *विप्रलम्भ श्रृंगार रस*

***'विप्रयोगस्तु विश्लेषो रूढ़विस्त्रम्भयोर्द्विधा।'***[23]

*जिन नायक और नायिका का प्रगाढ़ अनुराग होता है, ऐसे नायक तथा नायिका का पृथक् हो जाना ही विप्रलम्भ श्रृंगार (विप्रयोग) कहलाता है। एक–दूसरे*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*को प्राप्त कर लेने की स्थिति तक आते–आते, नायक–नायिका का वियोग हो जाना ही विप्रलम्भ है।*

*आचार्य परमानन्द शास्त्री कृत **'परिदेवनम्'** नामक शोकगीति में गीतकार ने विप्रलमभ श्रृंगार रस का प्रयोग किया है जो कि प्रस्तुत पंक्तियों में इस प्रकार दर्शनीय है–*

***अयि जीवनाथ! गम्यते***

***क्व तथा तूर्णमुपेक्ष्य हेलया?***

***कथमेकपदे निसर्गजं***

***बत दाक्षिण्यमपोहितं हि तत्।।*[24]

*संजीव गाँधी की मृत्यु होने पर मेनका विलाप करते हुए कहती है– ओ मेरे जीवन के स्वामी! इस प्रकार मुख मोड़कर इतनी जल्दी मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो? वह अपना स्वाभाविक दाक्षिण्य एकदम ही कहाँ खो दिया? इस प्रकार वियोगावस्था का निदर्शन कवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत गीत में 'मृतक' संजय गॉधी आलम्बन विभाव है। मृतक के शव को देखकर रूदन करना तथा अन्य जन के द्वारा शोक व्यक्त करने पर स्वयं फूट–फूटकर रोना उद्दीपन विभाव है। मेनका का 'रुदन' विलाप तथा 'उदास मुख' इत्यादि अनुभाव हैं।**'दुःख'**, **'स्मृति'** तथा **'चिन्ता'** व्यभिचारी भाव हैं।*

*आचार्य रमाकान्त शुक्ल प्रणीत **'भाति मे भारतम्'** राष्ट्र गीति में विप्रलमभ श्रृंगार रस का प्रयोग इन पंक्तियों में इस प्रकर किया गया है–*

***यत्र देशान्तरे प्रस्थिते वल्लभे***

***ऊर्मिलेव व्यवथापूरिता भामिनी।***

***विप्रलमभाम्बुधिं सश्रमं पारयेद्***

***भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।*[25]

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*कवि ने प्रोषितपतिका नायिका के विषय में वर्णन किया है कि ऊर्मिला के समान व्यथा से भरी हुई कोई पत्नि जब पति के परदेश चले जाने पर विरह के समुद्र को परिश्रम के साथ पार कर जाती है। उसी प्रकार प्रोषितपतिका नायिका भी अपने नायक के परदेश चले जाने पर उसके आगमन की प्रतीक्षा करती रहती है। पति के परदेश जाने के विलाप में वह अपना साज–श्रृंगार त्याग देती है और निरन्तर आस लगाये रहती है कि उसका नायक शीघ्र वापस आ जाये।*

*आचार्या पुष्पा दीक्षित कृत **'अग्निशिखा'** काव्य में विप्रलम्भ श्रृंगार रस का प्रधान रूप में प्रयोग किया गया है। विप्रलम्भ के पाँच हेतु हैं–**अभिलाषा, विरह, ईर्ष्या, प्रवास व श्राप।***

***अपरस्तु अभिलाषाविरहेर्ष्यावासशापहेतुकइतिपंचविधः।[26]***

*जिसमें विरह के तीन निमित्त हैं, मिलन के पश्चात्, दोनों में से किसी एक के अनुराग शून्य होने पर एवं अनुराग होने पर भी दैववश या गुरूजनों से लज्जा आदि के कारण समीप रहने पर भी पुनः मिलन न होने पर उत्पन्न विरह। अतः **'अग्निशिखा'** गीत संग्रह में नायक के अनुरागशून्य होने के कारण उत्पन्न विरह युक्त विप्रलम्भ का प्रयोग हुआ है जो इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है–*

***प्रेममद मुकुलित नयनयो राजसे किमनारतम्।***

***चपलता मनसोद्गता क्षणमपि न विरमति मे कथम्।***

***वहुल पक्षे क्षीयमाणा शशिकलाऽपि विवर्धते।***

***वर्धते निर्ममममनसि ते संस्थितिर्मे नो कथम्।।[27]***

*मेरे प्रेमरूपी मद से सिक्त खुले हुए नेत्रों में तुम मुझे बार–बार दिखाई देते हो। तुम्हारा प्रत्यक्ष निदर्शन न होते हुए भी ऐसा क्यों लगता है कि तुम मेरे सामने हो? तुम्हारी जो चंचलता है वो मन से निःसृत है, वो एक क्षण के लिए भी ठहरती नहीं हैं कृष्ण पक्ष में घटती हुई चन्द्रमा की कलाऐं भी शुक्ल पक्ष में जाकर पुनः बढ़ती जाती हैं लेकिन तुम्हारे द्वारा मन में मेरे प्रति कोई भाव नहीं है। नायिका*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*के द्वारा नायक की स्मृति का वर्णन करते हुए कवयित्री ने विप्रलम्भ शृंगार का सुन्दर प्रयोग किया है।*

*'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र प्रणीत* ***'मत्तवारणी'*** *नामक रागकाव्य में विप्रलम्भ शृंगार का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत गीत में सारे प्रयत्न करने के बाद भी अभीष्ट की सिद्धि न होने के संताप का वर्णन करते हुये, विशेष रूप से किसी नायक द्वारा नायिका के प्रति प्रेम न करने की व्यग्रता वर्णित हुई है, यथा–*

***क्रीतं सुवर्णजातं क्रीतञ्च भूरि रत्नम् !***

***किन्तेन, सुभ्रु ! यदि ते हार्दं मया न क्रीतम्!!***

***अस्योष्मणो निरासे किमिवौषधं प्रिये स्यात् !***

***हित्वा तवोपूगढं नितरामुनशीरशीतम्!![28]***

*नायक का नायिका के प्रति कथन है कि मेरे द्वारा स्वर्ण खरीद लिया गया, रत्न–आभूषण खरीद लिये गए। हे सुन्दर भ्रू वाली ! इन सबसे क्या प्रयोजन यदि मेरे द्वारा तुम्हारा हृदय ही न जीता गया। इस ग्रीष्म ऋतु में निराश होकर तुम्हारे गाढ़ आलिंगन को छोड़कर यह शीतल वायु भी व्यर्थ है। प्रस्तुत गीत में स्थायी भाव 'रति' है।*

*डॉ. रामविनय सिंह द्वारा रचित 'शाश्वती' गीत संग्रह में विप्रलम्भ शृंगार रस का सुन्दर वर्णन किया गया है।* ***'गहनवने'*** *नामक गीत में भगवान कृष्ण के प्रति गोपिकाओं का विरह वर्णन द्रष्टव्य है–*

***श्याम ! कथं विस्मरसि मामये***

***हित्वा गहनवने !***

***बालप्रीतिरीतिरपि विमला***

***क्व गता रता सखे !***

***नाम जपन्ती गोपिकाऽऽकुला***

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***यौवननता सखे !***

***विना श्रावणं विगतं गीतं***

***विना फाल्गुनं फाल्गु,***

***मधुऋतुरपि समुपेत्य व्रजं हाऽ***

***वतरति साश्रुघने !***[29]

*हे श्याम! तुम मुझे क्यों भूल जाते हो? इस दुःखरूपी गहन वन में मुझे छोड़कर क्यों भूल जाते हो? क्या तुम्हें स्मरण नहीं जो बचपन का वह निर्मल प्रेम था वो भी कहाँ चला गया और ये गोपिका आपका नाम जपते हुए मुरझा गई है किन्तु आप कभी याद नहीं करते हैं। गीतों के बिना यह श्रावण मास भी बीत गया, बिना फाल्गुन के फाग भी चला गया। हाय रे! अब यह ऋतुराज वसन्त भी घने आँसुओं में डूब गया है। कैसी स्थिति हो गई है हम सभी गोपिकाओं की? हे कृष्ण! क्या सचमुच हम सभी तुम्हारे हृदय से विस्मृत हो गए हैं? गीतकार ने विरह वर्णन बड़े ही स्वाभाविक रूप में किया है।*

***'छाया'***[30]***, 'अनुस्मृति'***[31]***, 'नीलनयने'***[32]***, 'प्रावृषे'***[33]***, 'त्वत्कृते'***[34] ***तथा 'मदिरचपलनयने'***[35] ***आदि गीतों*** *में भी शृंगार रस का प्रयोग किया गया है।*

***वीर रस***

***वीरः प्रतापविनयाध्यवसायसत्त्व***

***मोहाविषादनयविस्मयविक्रमाद्यैः।***

***उत्साहभूः स च दयारणदानयोगात्***

***त्रेधा किलात्र मतिगर्वधृतिप्रहर्षाः।।***[36]

*प्रताप, विनय, अध्यवसाय, सत्त्व, मोह, अविषाद, नय, विस्मय, पराक्रम इत्यादि विभावों के द्वारा होने वाले उत्साह, स्थायी भाव से वीर रस निष्पन्न होता है। वह*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*दया, युद्ध और दान नामक तीन प्रकार का होता है। इसमें मति, गर्व, धृति तथा प्रहर्ष व्यभिचारी भाव होते हैं।*

*प्रो. हरिदत्त शर्मा कृत **'गीतकन्दलिका'** गीत संकलन में वीर रस का प्रयोग किया गया है। **'प्रयाण गीतम्'** नामक गीत में सैनिकों का युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए उत्साहवर्धन किया गया है। जो प्रस्तुत पंक्तियों में इस प्रकार वर्णित है–*

***चलन्तु वीरसैनिकाः, प्रयान्तु वीर सैनिकाः।***

***सगौरवं सडिण्डिमं व्रजन्तु वीर सैनिकाः।।***

***त्रिवर्णभारतध्वजं नमन्तु वीर सैनिकाः।***

***धरातले स्ववीरतां प्रसारयन्तु सैनिकाः।।***[37]

*अर्थात् हे धीर! तुम बढ़े चलो। वीर सैनिकों! युद्ध के लिए प्रस्थान करो। गौरव के साथ तुम युद्ध का जयघोष करो। उस परम पवित्र त्रिवर्णक राष्ट्रीय ध्वज का नमन करो। इस धरती पर वीरतापूर्वक चलते रहो। गीतकार द्वारा प्रस्तुत गीत में उत्साह का संचार किया गया है। गीत के माध्यम से देशभक्ति की भावना का संवर्धन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत गीत में स्थायी भाव **'उत्साह'** है। **'सैनिक'** आलम्बन विभाव हैं, सैनिकों के **'दृढ़ता के साथ चलते कदम', 'सगर्व प्रस्थान'** तथा **'राष्ट्र ध्वज को नमन'** आदि उद्दीपन विभाव हैं। सैनिकों के **'चेहरे पर मुस्कान', 'दृढ़ता'** तथा **'गौरव'** इत्यादि इसके अनुभाव हैं। गर्व इसका व्यभिचारी भाव है।*

*आचार्या नलिनी शुक्ला प्रणीत **'निर्झरिणी'** गीत संग्रह में वीर रस का प्रयोग किया गया है। **'अबले ! सर्वशक्तिमयसबले !'** नामक गीत में कवयित्री द्वारा नारी शक्ति का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत गीत प्रत्येक नारी के लिए समर्पित है जो इस प्रकार है–*

***अबले! सर्वशक्तिमयसबले!***

***शिवां बिना शवतैवाचरिता***

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***शक्तौ स्थिता महेश्वरशिवता***

***नारीत्वेन विमुक्तिसुकुशले***

***अबले! सर्वशक्तिमयसबले![38]***

*हे स्त्री ! तुम सर्वशक्तिमयी हो। तुम सबला हो तुम्हारे बिना तो त्रिलोकी शिव की शक्ति भी शव के समान है। जब तुम शिव में शक्ति के रूप में स्थित हो तो निश्चय ही तुमसे अधिक सर्वशक्तिमान कोई नहीं है। प्रस्तुत गीत में कवयित्री द्वारा प्रत्येक पंक्ति में वीर रस का संचार किया गया है। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव 'वीर' है। 'स्त्री' अलाम्बन विभाव है।* ***'गर्व'*** *व्यभिचारी भाव है।*

*आचार्य रमाकान्त शुक्ल रचित* ***'भाति मे भारतम्'*** *गीति में वीर रस का प्रयोग किया गया है। भारतीय सैनिकों की वीरता की प्रशंसा में लिखा गया यह गीत प्रस्तुत है–*

***'डोगराई' स्थले राम आशायुतः***

***शत्रुटैङ्कान् विभिन्दन् खलाँस्तर्जयन्।***

***मातृपूजापरो यत्र नाकं गतो***

***भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।[39]***

*डोगराई रणक्षेत्र में शत्रु (पाकिस्तान) के टैंकों को तोड़ता हुआ एवं दुष्टों को ललकारता हुआ मेजर आशाराम त्यागी जहाँ मातृभूमि की पूजा करता हुआ स्वर्गगामी हुआ, वह निर्मल धरती भारत इस धरा पर सुशोभित है।*

*'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र विरचित* ***'कौमारम्'*** *बाल गीत संग्रह में* ***'अरिमर्दना वयम्'*** *नामक गीत में वीर रस का प्रयोग किया गया है। बालकों के माध्यम से उनके हृदय की भावना को उजागर किया गया है। जो प्रस्तुत गीत में इस प्रकार वर्णित है–*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***काममद्य शिशवः परन्तु युवकाः स्वस्तना वयम्।***

***वयं शासका वयं सैनिका अरिमर्दना वयम् ।।***

***स्वप्नाः सन्ति सहस्त्रमिता लोचनयोरस्माकम् ।***

***सङ्कल्पाश्चा सहस्त्रमिता नूनं हृदयेऽस्माकम्।***

***स्वप्नानहो पूरयिष्यामो विक्रमधना वयम्।***

***सङ्कल्पैः प्रभविष्यामः पुरुषार्थक्षमा वयम् ।।***[40]

*भले ही आज हम शिशु हैं किन्तु हम युवक भी होंगे, शासक भी होंगे। हम सैनिक भी हैं और शत्रुओं के संहारक भी हैं। हमारे अनेक स्वप्न हैं, हमारे नेत्रों में हजारों अपेक्षायें हैं। निश्चय ही हम अपने स्वप्नों को पूरा करेंगे। जो संकल्प लिया है, उसको पूर्ण करने के लिए प्रयत्न करेंगे। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव* ***'वीर'*** *है।* ***'शिशु'*** *आलम्बन विभाव है।* ***'हट', 'वीरता', 'दृढ़ता', 'चेहरे पर तेज', 'नेत्रों का खुलना'****आदि अनुभाव हैं।* ***'दृढ़ता'*** *तथा* ***'गर्व'*** *उसके व्यभिचारी भाव है। इनके अतिरिक्त* ***'लसल्लतिका', 'रागिणी'*** *तथा* ***'सन्धानम्'*** *इत्यादि गीत संग्रहों में भी वीर रस प्रयोग हुआ है।*

***करुण रस***

***इष्टनाशादनिष्टाप्तौशोकात्मा करुणोऽनु तम्।***

***निश्वासोच्छ्न्वासरूदिस्तम्भप्रलपितादयः।।***[41]

*करुण रस का स्थायी भाव शोक है, जो इष्ट के नाश तथा अनिष्ट की प्राप्ति से उत्पन्न होता है। इसके निःश्वास, उच्छ्वास, रुदन, स्तम्भ तथा प्रलाप आदि अनुभाव होते हैं। किसी प्रिय वस्तु का त्याग, इष्ट का नाश तथा अप्रिय की प्राप्ति होती है, वहाँ करुण रस का प्रयोग होता है।*

*आचार्य परमानन्द शास्त्री विरचित* ***'परिदेवनम्'*** *नामक शोकगीति में गीतकार द्वारा करुण रस का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है। युवा नेता संजय गाँधी*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*की मृत्यु पर माता इन्दिरा गाँधी का विलाप गीत में इस प्रकार निरूपित किया गया है–*

***प्रथमं तु पतिस्ततः पिता***

***तदनु त्वं सुत ! मृत्युना हृतः***

***गमिता नु तयोस्तु कृच्छ्त***

***स्तव भग्नास्मि शुचाङ्ग ! वार्धके।***[42]

*हे पुत्र! पहले पति, फिर पिता और अब तुम्हें भी मृत्यु ने मुझसे छीन लिया है, उन दोनों के शोक को तो मैंने किसी प्रकार सहन कर लिया किन्तु वृद्धावस्था में तुम्हारे शोक ने तो मुझे धराशायी ही कर दिया है। मेरे बेटे तुम अपनी माँ, पत्नी और बेटे को छोड़कर क्यों चले गये ? प्रस्तुत रस का स्थायी भाव शोक है। मृतक (संजय गाँधी) आलम्बन विभाव है। माता का रुदन, करुण विलाप, रोते–रोते मूर्छा आना, सर पटकना इत्यादि अनुभाव हैं। दुःख, चिन्ता, जड़ता तथा स्मृति इसके व्यभिचारी भाव हैं।*

***श्रणु तिष्ठ विलोकय क्षणं***

***करुणं गेदिति तेऽत्रमेनका।***

***अवनौ पतिता विचेष्टिते***

***व्यथते भ्राम्यति रौति मुह्यति।।***[43]

*प्रस्तुत गीत में मेनका के कारुणिक विलाप का वर्णन किया गया है। सुनो प्रिये ! ठहरो, देखो तम्हारी मेनका कैसा करुण विलाप कर रही है। पृथ्वी पर पड़ी तड़पती हुई वह व्यथित होती है, चक्कर काटती है, चीखती है और मूर्च्छित हो जाती है।*

*आचार्य रमाकान्त शुक्ल कृत **'भाति मे भारतम्'** गीत संग्रह मेंलोगों की सामाजिक स्थिति पर कारुणिक वर्णन अभिव्यक्त किया गया है–*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***दुःखदावानलैर्दग्धदोन्नरान्***

***क्षुत्पिपासाकुलान् वृत्तिकष्टार्दितान्।***

***वीक्ष्य कारुण्यपूर्णा नरा यत्र तद्***

***भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।***[44]

*अर्थात् जिन व्यक्यिों का ह्रदय भावुक होता है, वे दुःख दावानल से झुलसे हुए शरीर वाले, भूख–प्यास से व्याकुल तथा बेरोजगार लोगों को देखते हैं तो करुणा से भर जाते हैं। उनके दुःखों को दूर करने हेतु वे कोई न कोई प्रयत्न अवश्य करते हैं। धन्य है ऐसी भारतभूमि जहाँ दयावान मनुष्य निवास करते हैं। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव* ***'शोक'*** *है। व्यक्ति विशेष इसका आलम्बन विभाव है। झुलसा शरीर, भूख से व्याकुल, गरीबी तथा बेरोजगारी उद्दीपन विभाव हैं। दया सात्विक भाव है। भावुकता, दैन्य तथा करुणा इसके अनुभाव हैं। चिन्ता इसका व्यभिचारी भाव है।*

*'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र कृत* ***'वाग्वधूटी'*** *रागकाव्य में* ***'किं जलेन तर्पणम्'*** *गीत में* ***'का वर्षा जब कृषि सुखानी'*** *नामक प्रसंग पर आधारित प्रस्तुत गीत में कृषकों की दयनीय स्थिति का वर्णन है–*

***किं वृथैव गर्जनेन मेदिनी मदालसा!***

***नो यदाऽवमज्जिता जलप्रवाहकैः कृशा!!***

***निद्रयाऽभिभावितो निमील्य नेत्रकद्वयम्!***

***नागरोऽभिवाञ्छति प्रियोपगूढमव्ययम्!!***[45]

*मद के आलस से युक्त होकर यह मेदिनी व्यर्थ ही गरजती है। क्या इसका कोई परिणाम हुआ ? जब वर्षण होना चाहिए तब तो वह वर्षा हुयी नहीं, अब यह मेदिनी व्यर्थ ही गरज रही है। यदि यह जल में निमग्न नहीं हुई तो दोनों नेत्रों को बन्द करके गहन निद्रा में खो जाना चाहिए। कृषकों की मेघवर्षण से अपेक्षा है कि वर्षण होगा किन्तु वर्षण न होने के कारण केवल मात्र गरजने से यह कृषकों*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*को और भी अधिक सन्तप्त कर रहा है। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव 'शोक' है। मेदिनी (बादल) आलम्बन विभाव है। गरजना तथा उमड़ना–घुमड़ना उद्दीपन विभाव है। उलाहना देना एवं कुपित होना इसके अनुभाव हैं। दैन्य, चिन्ता और त्रास इसके व्यभिचारी भाव हैं।*

*डॉ. रामविनय सिंह द्वारा रचित **'शाश्वती'** गीतसंग्रह में करुण रस का प्रयोग किया गया है। **'निर्दयता'** नामक गीत में गीतकार द्वारा ईश्वर के प्रति उपालम्भ को प्रस्तुत किया गया है–*

***विधातस्तेऽपि निर्दयता भृशं***
***क्लिश्नाति मच्चित्तम् !***
***त्वमसि मेधा, विधानं साधु ते***
***भवति श्रुतम्पूर्वम्,***
***त्वमसि कर्त्ता, जगन्निर्मासि***
***विस्तृत मानसेऽपूर्वम्,***
***कथय कथमीदृशं कृत्यं***
***त्वया सम्पादितं ब्रह्मन्!***
***त्वदीयं नाम दुःखेनाधुना***
***पुष्णाति मच्चित्तम्!***[46]

*अर्थात् हे विधाता! यह तो इतनी अधिक निर्दयता है, मेरे चित्त को बड़ा क्लेश देती है। तुम ही सारे विधानों के विधाता हो, यह तो पहले से ही सुना गया है। तुम ही कर्त्ता हो, तुम ही निर्माता हो, तुम्हारा हृदय इतना विशाल है कि तुम जो कुछ भी मानव विशेष के लिए करते हो, अपने मन से करते हो। तब बताओ कि तुमने ऐसा क्यों किया ? जब आप ही हमारे कर्त्ता–धर्त्ता हैं तो उचित के स्थान पर अनुचित क्यों करते हैं। आपके नाम का स्मरण करने से ही मेरे चित्त में उत्पन्न क्लेश है, वह शान्त हो जाता है। हे ईश्वर! इस निर्दयता से हमें बचाओ।*

***'मनस्संतापः'***[47]***, 'ते नु गतानि दिनानि'***[48]***, 'दृग्गीतम्'***[49]***, 'प्रावृषि'***[50]***, 'मुखकमलम्'***[51]***, 'त्वत्कृते'***[52]***, 'मदिरचपलनयने'***[53]***, 'दुःखम्'***[54]***, 'वदति वसन्तसुता'***[55] *इत्यादि गीतों में भी करुण रस का प्रयोग किया गया है।*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

*संस्कृत नवगीतकारों द्वारा शृंगार, वीर तथा करुण रस का प्रयोग प्रधान रूप में किया गया है, साथ ही रौद्र रस, भयानक रस तथा शान्त रस का भी प्रयोग मिलता है। गीतकारों ने वर्णन वैविध्य के आधार पर रस–वैविध्य को भी प्रमुखता दी है। इसलिए उनके गीतों में सभी रस सम्यक् रूप से वर्णित हुए हैं।*

***रौद्र रस***

***क्रोधो मत्सरवैरिवैकृतमयैः पोषोऽस्य रौद्रोऽनुजः***
***क्षोभः स्वाधरदंशकम्पभृकुटिस्वेदास्यरागैर्युतः।***
***शस्त्रोल्लासविकत्थनासधरणीघातप्रतिज्ञाग्रहै–***
***रत्रामर्षमदौ स्मृतिश्चयलतासूयौग्रवेगादयः।।*[56]**

*मात्सर्य तथा शत्रु द्वारा किये गये उपकार आदि से उत्पन्न होने वाला जो क्रोध है, वह रौद्र रस की पुष्टि करता है, जिससे क्षोभ उत्पन्न होता है। अमर्ष, मद, स्मृति, चपलता, असूया, उग्रता तथा वेग आदि अनुभाव होते हैं।*

***भयानक रस***

***विकृतस्वरसत्त्वादेर्भयभावो भयानकः।***

***सर्वाङ्गवेपथुस्वदेशोषवैवर्ण्यलक्षणः।।*[60]**

*विकृत (डरावने) शब्द अथवा सत्त्व (पराक्रम, प्राणी तथा पिशाच आदि) से उत्पन्न होने वाला भय नामक स्थायी भाव ही परिपुष्ट होकर भयानक रस रूप में परिणत हो जाता है। विकृत शब्दों को सुनने या सत्त्व को देखने से भयानक रस की उत्पत्ति होती है। इसमें अंगों में कम्पन इत्यादि अनुभव होते हैं तथा दैन्य आदि व्यभिचारी भाव होते हैं।*

*प्रो. श्रीनिवास रथ प्रणीत **'तदेव गगनं सैव धरा'** नामक गीति संग्रह में 'पुरुषार्थ संहिता' गीत में भयानक रस का वर्णन किया गया है।*

***सविता ताम्यति***

***धरणी विदलति***

***ग्रन्थगता गुरुवाणी रोदिति***

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***हिंसा–जर्जरिता।***

***रेणुरूषिता व्रणविरूपिता***

***विलुठति भुवि पुरुषार्थसंहिता।।***

***प्रलयकालसंवर्तकजलधर–***

***घनतमसा संवृता चेतना।***

***सहस्त्रधा–सम्चुर्णित–भास्कर–***

***दहनदुर्गतानन्तवेदना।।***

***श्मशानधूमाकुलता प्रसरति***

***शोकाकुल–मानवता सीदति***

***दुरभिसन्धिभीता।***[61]

*प्रस्तुत गीत में पुरुषार्थ संहिता की विद्रूप अवस्था को देखकर प्रकृति के भयंकर रूप का वर्णन किया गया है। व्याकुल सूरज तड़प रहा है, धरती फट गयी है, चारों ओर हिंसा देख–देखकर ये धार्मिक ग्रन्थ भी रो रहे हैं। जीवन के चार पुरुषार्थ हैं, वे भी आहत हैं।धर्म के नाम पर अनर्गल तथा अनुचित क्रियाकलाप हो रहे हैं, अर्थ की मोहमाया में मानव ही मानव का शत्रु बन बैठा है, काम ने तो विनाशी रूप धारण कर लिया है और मोक्ष की तो कोई चर्चा ही नहीं। प्रलयकाल में घुमड़ते संवर्तक मेघों के घने अंधेरे में वो चेतना कहीं दब गयी है। हजारों टुकड़ों में खण्ड–खण्ड सूरज की भभकती लपटों से दुर्गति तथा दुराचार की अनगिनत वेदनाएँ फैल रही हैं। शमशान के धुँए जैसी आकुलता छा रही है और यह मानवता सिसक रही है। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव भय है। इसका आलम्बन विभाव प्रकृति है। सूर्य की प्रचण्डता, धरती का फटना, हिंसा इत्यादि इसके उद्दीपन विभाव हैं। आवाज में कम्पन्न, अधीरता, निःश्वास इत्यादि इसके अनुभाव हैं। शंका, दैन्य तथा चिन्ता इसके व्यभिचारी भाव हैं।*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***शान्त रस***

***शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः।***

***कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्री नारायण दैवतः।***

***अनित्यत्वादिनाऽशेषवस्तुनिःसारता तु या।।*[63]**

*शान्त रस का स्थायी भाव शम (निर्वेद) आश्रय उत्तमपात्र, वर्ण कुन्दपुष्प तथा चन्द्रमा आदि के समान सुन्दर शुक्ल और देवता भगवान् लक्ष्मीनारायण हैं। अनित्यत्व दुःखमयत्व आदि रूप से सम्पूर्ण संसार की असारता का ज्ञान अथवा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान कराने में शान्त रस की उत्पत्ति होती है।*

*आचार्य परमानन्द शास्त्री कृत 'परिदेवनम्' शोकगीति में शान्त रस का वर्णन किया गया है जो प्रस्तुत गीत में अवलोकनीय है–*

***प्रिय ते सुहृदः शुचा बला***

***दवसीदन्ति विमोहमूकिताः।***

***विपिने समिता द्विपा इव***

***सहसा यूथपतौ निपातिते।।*[64]**

*संजय गाँधी की मृत्यु पर उनकी माता द्वारा विलाप किये जाने पर शान्त रस की अनुभूति हुई है, यथा– देखो तुम्हारे प्यारे मित्र इस दुःख जनित मोह से स्तब्ध और मूक हैं। वे ऐसे लगते हैं जैसे अपने यूथपति के निधन पर जंगल में मौन एकत्र हुए हाथी। प्रस्तुत गीत में निर्वेद नामक स्थायी भाव है। मृतक आलम्बन विभाव है। मेनका का उदास मुख, मित्रों का मौन धारण करना तथा प्रिय के वियोग में स्तब्ध हो जाना इसके अनुभाव हैं। दुःख तथा चिन्ता इसके व्यभिचारी भाव हैं।*

*आचार्य रमाकान्त शुक्ल रचित गीति 'भाति मे भारतम्' में शान्त रस का प्रयोग किया गया है।*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

***प्रेरणादायकं सत्कथागायकं***

***ज्ञानविज्ञानतेजोबलाधायकम्।***

***दुःखदारिद्रय–दग्धान् सदा पालय–***

***न्मोदते मे सदा पावनं भारतम्।।***[65]

*जीवन जीने के लिए प्रेरणा देने वाला, सत्कथाओं (जिनसे अज्ञानी को ज्ञान मिले) को गाने वाला, ज्ञान, विज्ञान, तेज और बल का निधान एवं दुःख और गरीबी से दग्ध लोगों का सदा पालन करने वाला यह भारत देश आध्यात्मिकता से युक्त है एवं सदा प्रसन्न रहता है। प्रस्तुत रस का स्थायी भाव निर्वेद है। इन उदाहरणों के अतिरिक्त भी अर्वाचीन संस्कृत गीतों में शान्त रस का प्रयोग हुआ है।*

*इस प्रकार भावों का काव्य में भावित होने पर अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों द्वारा प्रणयनिवेदन एवं विरह–व्यथित प्रसंग में शृंगार रस का, लोगों के उत्साहवर्धन में वीर रस का, मार्मिक अभिव्यक्ति में करुण रस का, क्रूरता में रौद्र रस का, भयावह स्थिति में भयानक रस का तथा चित्त की शान्ति एवं जड़ता की स्थिति में शान्त रस का प्रयोग किया गया है।*

## सन्दर्भ

1. *वामन शिवराम आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ सं. 1076*
2. *दूर्वा, फरवरी 1994, पृष्ठ सं. 11*
3. *वही पृ.11*
4. *स्वरभारती – पृष्ठ सं. 17*
5. *वही, पृष्ठ सं. 26*
6. *तदेव गगनं सैव धरा – पृष्ठ सं. 35*
7. *वही– पृष्ठ सं. 19*
8. *जय भारत भूमे – पृष्ठ सं. 44–45*
9. *निर्झरिणी – पृष्ठ सं. 90*
10. *जय भारत भूमे – पृष्ठ सं. 45*
11. *वही–पृष्ठ सं. 48*

12. *वही– पृष्ठ सं. 35–36*
13. *वही– पृष्ठ सं. 50–52*
14. *वाग्वधूटी – पृष्ठ सं. 12*
15. *श्रुतिम्भरा – पृष्ठ सं. 54*
16. *षोडशी – पृष्ठ सं. 20*
17. *भाति मे भारतम् – पृष्ठ सं. 13*
18. *वही*
19. *वही– पृष्ठ सं. 4*
20. *वही*
21. *गीतधीवरम् – पृष्ठ सं. 31*
22. *वही– पृष्ठ सं. 25*
23. *वही– पृष्ठ सं. 65*
24. *वही– पृष्ठ सं. 32*
25. *वही– पृष्ठ सं. 20*
26. *वही– पृष्ठ सं. 18*
27. *वही– पृष्ठ सं. 40*
28. *वही– पृष्ठ सं. 49*
29. *वही– पृष्ठ सं. 48*
30. *वही– पृष्ठ सं. 20*
31. *वही– पृष्ठ सं. 66*
32. *वही– पृष्ठ सं. 31*
33. *वही– पृष्ठ सं. 17*
34. *वही– पृष्ठ सं. 52*
35. *वही– पृष्ठ सं. 43, 27*
36. *तदेव गगनं सैव धरा – पृष्ठ सं. 41*
37. *वही– पृष्ठ सं. 32*
38. *निर्झरिणी, वाकतरङ्ग पृष्ठ सं. 38*
39. *निर्झरिणी पृष्ठ सं. 13*
40. *निस्यन्दिनी – पृष्ठ सं. 57*

41. *बालगीताली– पृष्ठ सं. 52*
42. *मृद्वीका – पृष्ठ सं. 70*
43. *कौमारम् – पृष्ठ सं. 121–123*
44. *स्वरभारती पृष्ठ सं. 35*
45. *तदेव गगनं सैव धरा – पृष्ठ सं. 129*
46. *सारस्वतसमुन्मेषः पृष्ठ सं. 14*
47. *निर्झरिणी – पृष्ठ सं. 88*
48. *वही– पृष्ठ सं. 8*
49. *वही– पृष्ठ सं. 91*
50. *वही– पृष्ठ सं. 9*
51. *वही– पृष्ठ सं. 7*
52. *वही– पृष्ठ सं. 97*
53. *वही– पृष्ठ सं. 33*
54. *वही– पृष्ठ सं. 89*
55. *मृद्वीका – पृष्ठ सं. 37–38*
56. *षोडशी युगकवि पृष्ठ सं. 19*
57. *निर्झरिणी, वाकतरङ्ग – पृष्ठ सं. 43*
58. *मृद्वीका – पृष्ठ सं. 66*
59. *वही– पृष्ठ सं. 60*
60. *वही– पृष्ठ सं. 61*
61. *वही– पृष्ठ सं. 66*

## REFERENCES

1. Vaman Shivarm Apte: Sanskrit Hindi Kosh, pg 1076
2. Doorva, February 1994, pg 11
3. Same, pg 11
4. Swarbharti, pg 17
5. Same, pg 26

6. Tadaiva Gaganan Saiv Dhara, pg 35
7. Same, pg 19
8. Jai Bharat Bhoome, pg 44-45
9. Nirjharini, pg 90
10. Jai Bharat Bhoome, pg 45
11. Same, pg 48
12. Same, pg 35-36
13. Same, pg 50-52
14. Vagvdhooti, pg 12
15. Shrutimbhara, pg 54
16. Shodashi, pg 20
17. Bhair me Bharatam, pg 13
18. Same
19. Same, pg 4
20. Same
21. Geetdhivaram, pg 31
22. Same, pg 25
23. Same, pg 65
24. Same, pg 32
25. Same, pg 20
26. Same, pg 18
27. Same, pg 40
28. Same, pg 49
29. Same, pg 48
30. Same, pg 20
31. Same, pg 66
32. Same, pg 31
33. Same, pg 17
34. Same, pg 52
35. Same, pg 43, 27
36. Tadaiva Gaganan Saiv Dhara, pg 41
37. Same, pg 32
38. Nirjharini, Vaktarang, pg 38
39. Nirjharini, pg 13
40. Nisyandini, pg 57
41. Balgitali, pg 52
42. Mridvika, pg 70
43. Kaumaram, pg 121-123

44. Swarabharati, pg 35
45. Tadaiva Gaganan Saiv Dhara, pg 129
46. Saraswatsamunmeshah, pg 14
47. Nirjharini, pg 88
48. Same, pg 8
49. Same, pg 91
50. Same, pg 9
51. Same, pg 7
52. Same, pg 97
53. Same, pg 33
54. Same, pg 89
55. Nridvika, pg 37-38
56. Shodashi Yugkavi, pg 19
57. Nirjharini, Vaktarang, pg 43
58. Mridvika, pg 66
59. Same, pg 60
60. Same, pg 61
61. Same, pg 66